त्रिमुनि

पाणिनि | कात्यायन (वररुचि) | पतञ्जलि

व्याकरण की परंपरा :—

1. बार्हस्पति परंपरा
2. माहेश्वरी परंपरा

2. माहेश्वरी परंपरा —

- माहेश्वरी परंपरा के अनुसार भगवान महेश्वर ही प्रथम वैयाकरण हैं।
- माहेश्वर सूत्रों के माध्यम से पाणिनी को व्याकरण का ज्ञान हुआ।
- इस परंपरा को पाणिनीय परंपरा भी कहते हैं।
- इस परंपरा को वर्तमान में अधिक तार्किक एवं मनोवैज्ञानिक माना जाता है।

<u>महर्षि पाणिनि</u> :- समय : 500 ई॰ पू॰

- पाणिनि के नाम :-

'अष्टाध्यायी' के निर्माता महर्षि पाणिनी के निम्नलिखित नाम उपलब्ध होते हैं – i) पाणिन, ii) पाणिनि ; iii) दाक्षीपुत्र iv) शालङ्कि v) शालातुरीय तथा आहिक ।

जन्म : शालातुरग्राम (पाकिस्थानस्य लाहौर नगरस्य समीपे)
अध्ययन : तक्षशिला
माता का नाम : दाक्षी
पिता का नाम : पणिन
विषय : अष्टाध्यायी, लिङ्गानुशासनम्, जाम्बुवतीविजमम्
उल्लेखनीय कार्य : अष्टाध्यायी

दाक्षी (माता), पाणिन …

अष्टाध्यायी के कर्ता पाणिनी कब हुए इस विषय में कई मत है। भंडारकर इनका समय 7वीं शताब्दी ई॰ पू॰ मानते हैं। मैकडानेल, कीथ आदि कितने ही विद्वानों ने इन्हें चौथी शताब्दी ई॰ पू॰ मानी है। भारतीय अनुश्रुति के अनुसार पाणिनि नंदों के समकालीन थे और यह समय 5वीं शताब्दी ई॰ पू॰ होना चाहिए। पाणिनि में शतमान, विंशतिक और कार्षापण आदि जिन मुद्राओं का एक साथ उल्लेख है इनके आधार पर एवं अन्य कई कारणों से हमें पाणिनि का काल यही समीचीन जान पड़ता है।

- 14 माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किए गए ताण्डव नृत्य से मानी गयी है।
- प्रसिद्ध है कि महर्षि पाणिनी ने इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव के आशीर्वाद से प्राप्त किया जो कि पाणिनीय संस्कृत व्याकरण का आधार बना।

• 'अष्टाध्यायी' का महत्व :-

सभी प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वान् 'अष्टाध्यायी' के महत्व को एक-स्वर से स्वीकार करते हैं। सभी ग्रन्थों में पाणिनीय व्याकरण को सर्वाधिक उत्कृष्ट माना गया है। अष्टाध्यायी में सूत्रों का सङ्कलन है, जो वैदिक एवं लौकिक दोनों रूपों में उपलब्ध है। अष्टाध्यायी की शैली अत्यंत सुबोध है अष्टाध्यायी विलक्षण रचना कौशल और संयोजन के कारण आज भी पाणिनि का यह शास्त्र शब्द विद्या का उत्कृष्टतम निदर्शन कहा जाता है। पाणिनीय अष्टाध्यायी के पश्चात् इनके सूत्रों पर कात्यायन ने वार्तिक तथा भगवान् पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना की।

• पाणिनि के आचार्य :-

पाणिनि के आचार्य के विषय में परम्परागत मत तो यही है कि पाणिनि ने गोपर्वत पर तपस्या करके साक्षात् महेश्वर शिव से ही अक्षरसमाम्नाय का उपदेश प्राप्त किया था। इसी अक्षर-समाम्नाय को आधार बनाकर पाणिनि 'अष्टाध्यायी' का निर्माण किया था। 'कथासरित्सागर' में उपवर्ष के अग्रज वर्ष ~~अ~~ उपाध्याय को पाणिनि का गुरु माना गया है।

• 'अष्टाध्यायी' का स्वरूप :-

'अष्टाध्यायी' इस नाम से ही स्पष्ट है कि पाणिनीय व्याकरण आठ अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। समस्त 'अष्टाध्यायी' की सूत्रसंख्या या पादगत सूत्र-संख्या में एकमत नहीं है, क्योंकि 'काशिका' आदि ग्रन्थों में कुछ ऐसे भी सूत्र मान लिए गए हैं जो अन्य वैयाकरणों की दृष्टि में वार्तिक या वार्तिकात्मक सूत्र हैं, पाणिनीय सूत्र नहीं।

→ 'अष्टाध्यायी' महर्षि पाणिनी द्वारा रचित संस्कृत व्याकरण अत्यंत प्राचीन ग्रंथ है।

→ महाभाष्य में अष्टाध्यायी को सर्ववेद-परिषद्-शास्त्र कहा गया है।

→ अष्टाध्यायी के सूत्रों की संख्या 3983 है और सिद्धान्त-कौमुदी के अनुसार 3976 है।

→ अष्टाध्यायी में अनेक पूर्वाचार्यों के मतों और सूत्रों का संनिवेश किया गया। उनमें से शाकटायन, शाकल्य, अगिशाली, गार्ग्य, गालव, भारद्वाज, कश्यप, शौनक, स्फोटायन, चाक्रवर्मण का उल्लेख पाणिनि ने किया।